Research Paper History

Brahamand in Jainism

Prof Dr B L Sethi Director, Trilok Institutute of higer Sturdies and Research Scholar, Research ,Hotel OM Tower, Church Road University of Rajasthan M I Road, Jaipur- 302001

Abhilasha Jaiman Research Scholar, University of Rajasthan

KEYWORDS

लोक (ब्रह्मण्ड स्वरूप) सृष्टि की रचना अदृश्य व चमत्कारिक रूप से मानी जाती है। हिन्दू धर्म में अनेक कथा कहानियां उपलब्ध है। हिन्दू धार्मिक मान्यता में माना गया है, प्रलय के कुछ समय पूर्व सृष्टि के सृजनकर्ता विष्ण ु ने मनुष्य को स्वप्न में दर्शन देकर एक नौका निर्माण का आदेश देकर सभी प्रजातियों के जोडे रखने को कहा। निश्चित समय पर भयंकर प्रलय आने पर विष्णु भगवान ने मछली का अवतार लेकर मनु व उनकी नौका का सुरक्षित रखा। इसके पश्चात् पुनः मनु व उनकी सन्तानों ने सृष्टि की रचना में पंच मुख्य भूमिका निभाई।

सृष्टि की रचना में पंच तत्व जल, थल, वायु, अग्नि, आकाश की प्रमुख भू मिका है और यही पांच तत्व मिलकर मनुष्य के शरीर का निर्माण करते हैं, परन्तु जैन धर्म में यह माना गया है कि यह सृष्टि पर द्रव्यों से मिलकर बनी है। इसलिए जैन धर्म की सृष्टि की रचना संबंधी विचार भिन्न है। जैन ध र्म के अन्तर्गत धर्म के अनुसार द्रव्य, आकाश का जिनता भाग देखा जाये वह लोक कहलाता है।

जैन धर्म के अन्तर्गत ब्रह्मण्डीय स्वरूप की कल्पना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से है। जैन दृष्टिकोण भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण की भांति यह स्वीकार करता है कि पृथ्वी सौरमण्डली में स्थित है। इसके चारो और वायुमण्डल तथा ऊपर आकाश में सौरमण्डल है।

आचार्य उमास्वामी ने तत्वार्थ सूत्र के अन्तर्गत ब्रह्मण्डीय स्वरूप की व्याख्या करते हुए पृथ्वी व अन्य लोकों के बारे में वर्णन किया है।

जैन धर्म व दर्शन के अनुसार जो पदार्थों को देखे व जाने से लोक है। जैन दर्शन इस ब्रह्मण्ड में तीन लोक माने गए हैं। अधोलोक, मध्यलोक और उध र्वलोक।

अधोलोक का आकार वेत्रासन के समान है। मध्य लोक का आकार खड़े हुए मृदंग के ऊर्ध्वभाग जैसा है तथा ऊर्ध्वलोक का आकार बड़े हुए मृदंग के समान है।

लोक का विस्तार : – आचार्य उमास्वामी के अनुसार समस्त लोक राजू नामक ईकाई के द्वारा नापा जा सकता है। उनके अनुसार सम्पूर्ण लोक की ऊँचाई चौदह राजू है। जिसमें अधोलोक की ऊँचाई सात राजू है। मध्य लोक की ऊँचाई एक लाख योजन है। उर्ध्वलोक की ऊँचाई एक लाख योजन कम सात राजू है।

अधोलोक : अधोलोक के अन्तर्गत सात पृथ्वीयों का वर्णन किया गया है, जो एक–एक राजू के अन्तर में स्थित है। इनके निम्न नामों का उल्लेख किया है जो एक।

1. रत्नप्रभा : बरभाग, पंक भाग, अक्षब बहुल, इनके निम्न नामों का उल्लेख तत्वथिसूत्र में किया गया है। जिसकी क्रांति रत्नों के समान है। (1 लाख 80 हजार योजन मोर्य है)

2. शर्कराप्रभा : जो शर्करा के समान प्रभा वाली भूमि है। (यह भूमि 32 हजार योजन मोटी है)

3. बालुकाप्रभा : जिसकी प्रभा बालुका के समान होती है। (28 हजार योजन मोटी)

4. पंकप्रभा : प्रभा काचड़ के समान है (10 लाख नरक हैं) (24 हजार योजन मोटी)

5. धूमप्रभा : जिसकी प्रभा धुंवा के समान है, वह घूम प्रभा भूमि है।

6. तमः प्रभा : जिसकी प्रभा अंधकार के समान है वह भूमि तम प्रभा है।

7. महातम प्रभा : इस भूमि में गहन अंधकार है।

इन पृथ्वीयों के अन्य नाम भी बतलाये गये है। धम्मा, वंशा, मेधा, अंजना, आरेष्टा, मघवा और माघवी।

तत्त्वार्थसूत्र में वर्णित ब्रहाण्ड

तत्वार्थसूत्र में वर्णित ब्रह्मण्ड के अनुसार यह लोक जीव और जीवेतर पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल नामक 6 द्रव्यों सं संरचित है। और इसमें तीनों लोकों को ऊर्ध्वलोक , मध्यलोक और अधोलोक के नाम से जाना जाता हैं और इनको ही क्रमशः स्वर्गलोक, भूलोक और नरकलोक कहा जाता है।

लोक के अन्तर्गत ऊर्ध्वलोक में स्वर्गों की स्थिति के ऊपर क्रमशः नौ ग्रैवेयक, नो अनुदिश और पांच अनुत्तर विमान है, जिनके ऊपर शिला स्थित है तथा धनोदधि वातवलय, धनवातवलय और और तनुवातवलय तीनों लोकों को वलीयत और स्थित किये हुए है। इस लोक का आकार पुरूषाकार हैं

पृथ्वीलोक या भूलोक में अनेक पर्वत, द्वीप, नदियां, घाटियां आदि है। यहां पर मध्य में जम्बूद्वीप स्थित है और इस जम्बू आप में समद्र चारों ओर से खारे है। इस लवणीय समुद्र के अन्तर्गत उससे द्विगुणित विस्तार वाला ध ातकी खण्ड है। जो अपने से दुगुने विस्तार वाले कलोदधि समुद्र के अनन्तर पुष्करवर द्वीप है।

इस प्रकार जम्बूद्वीप, धातकी खण्ड और पुष्करार्द्ध द्वीप ढाई द्वीप नाम से जाना जाता है। इस ढाई द्वीप का ही मध्य भाग जम्बूद्वीप है।

इस ढाई द्वीप में पांच मेरू, पैंतीस क्षेत्र, तीस पर्वत, सत्तर महानदियां और 30 हद है। जम्बूद्वीप में चार औरा ढाई द्वीप में 20 महाविदेह है।

तत्वार्थ सूत्र के वर्णन के अनुसार जम्बूद्वीप में बत्तीस तथा चौतीस आर्यखण्ड है, इन्हीं आर्यखण्डो में पदवीधर, महापुरूष, तीर्थंकर आदि उत्पन्न होते हैं इसी जम्बूद्वीप में श्रेष्ठ शिखरों वाले छः कुलधर पर्वत है। जिनके नाम 1. हिमवन 2. महाहिमवन 3. निषध 4. नील 5. रूक्मि तथा 6 शिखर्रा है।

भरत क्षेत्र :

जम्बू द्वीप का ही एक क्षेत्र भरत क्षेत्र है। जिसमें पांच म्लेच्छ खण्ड और एक आर्य खण्ड। आर्यखण्ड और म्लेच्छ खण्डों को पूर्व और पश्चिम में क्रमशः सिन्धु और गंगा नदी पृथक करती है। तथा उत्तर दिशा में विजपार्द्ध पर्वत है। इस क्षेत्र में 14 नदियां बहती है। जिनमें से भरत क्षेत्र में गंगा और सिन्ध ु नदियां बहती है।

हिमवत : यह भरत क्षेत्र की उत्तरी सीमा पर स्थित है। यह स्पष्ट रूप से हिमालय की है। नदियां – भारत की स्थिति के साथ–साथ इसमें भारतमें बहने वाली नदियों का उल्लेख भी मिलता है। जहां सातों क्षेत्रों के मध्य जाने वाली गंगा, सिंधु, रोहित, रोहितास्या, हरिल, हरिकांता, सीता, सितोदा,

नारी, नरकान्ता, सुवर्ण, रूप्यकूला, रत्तत्र और रक्तोदा आदि नदियां है।

उर्ध्वलोक :

जैन धर्म के अनुसार ऊर्ध्वलोक, स्वर्गलोक के समान है जो कि सुमेरू पर्वत की चोटी से एक रेशे के अन्तर से प्रारम्भ हो जाता हैं।

References

1. Aacharya Yati Brashab : Trilloya Parniti chapter 3 page 97-99 Bhartiya Gyan Peeth Prakashan, New Delhi 2009
2. Aacharya Vidhyanandi: Tatvarth Shlokvartikalankar Path II chapter 3 Page 32-37 Bhartiya Gyan Peeth Prakashan, New Delhi 1990